मोटे अनाज की खेती व उनसे मिलने वाली पौष्टिकता तथा जैविक खाद की उपयोग के फायदे

जैविक खाद बनाने की विधि

नाडेप विधि	वर्मी कम्पोस्ट विधि
ठस विधि में जमीन की सतह के उपर 12 फीट लम्बा, 5 फीट चौड़ा एवं 3 फीट उंचा आकार का ईटों का पक्का जालदार टंकी बनाते है	ठस विधि में जमीन की सतह के उपर 6 फीट लम्बा, 3 फीट चौड़ा व 2 फीट उंचा आकार का ईटों का पक्का जालीदार टंकी बनाते हैं।
ठसमें पहली पर 6 इंच मोटी कुड़े कचरे (घास,फुस,पत्ती,पैरा आदि)डालते है।	ठसमें पहली परत 6 इंच मोटभ सुखे गोबर ((घास,फुस,पत्ती,पैरा आदि) बिछाते ळैं।
छुसरी परत में 4से 5 किलो (एक टोकरी) गोबर का घोल छिड़काव करते हैं।	इसके बाद 6 इंच मोटी अच्छी सड़ी गोबर(15दिन पुराना) पानी के साथ मिला कर बिछाते हैं।
तिसरी परत में 20 से 30 टोकरी बारीक मिटटी बिछाते हैं।	ठसके उपवर केचुआ को समान रूप से फैला देते हैं।
ठसकी कम में सामग्री को डालकर टंकी को भरते हैं।इसके बाद गोबर से लिपाई कर टंकी को बंद कर लेते हैं।	ठस पर पुनः 6 इंच मोटी सूखे चारा की तह बिछाते हैं और इसे टाट या बारी से पानी छिड़काव कर ढंक देते हैं।
ध्यान रहे कि टंकी हमें" ाा नमी बनी रहे।	आव" यकता रोजाना पानी का छिड़काव करते रहते हैं ताकि नमी बनी रहे।
इस विधि से खाद बनने में 3से4 माह का समय लगता है।	इसमे 2 से 3 माह का समय, सावधानियां–जहरीली या कड़व पते जैसे नोम,करंज या अन्य नही डालना व छायादार स्थान होनी चाए।

मटका खाद– सामग्री– ताजागोबर (10 किला), गौमुत्र 6–7लीटर, गुड़–250 ग्राम, बेसन–1किलो, पानी–10 लीटर,

विधी– इन सभी का अच्छी से मिश्रण कर ले उसके बाद मिश्रण को मिट्टी के मटका में रखकर उसके मुंह को सुती कपड़े से बंद कर दे। 4 से 5 दिनो के बाद 20 गुणा पानी प्रति लीटर मिला कर हर 15 दिनों में छिड़काव करे।

रासायनिक खाद के नुकसान एवं जैविक खाद के फायदे

	रासायनिक खाद	जैविक खाद
जमीन	बंजर करता है /कठोर	पेला व उपजाउ बनाता है
उपजाउ क्षमता	स्थिर रहता है	बढ़ता जाता है
दुष्प्रभाव	मछली, केचुआ मर जाते है, सुक्ष्मजीव नष्ट हो जाते है जो हमारे लिए लाभ प्रद होते है	कोई दष्प्रभाव नही है
किमत	महंगा है	सस्ता होता है स्वयं बना सकते है।
अधिक मात्रा	नुकसानदायक है।	कोई नुकसान नही है।
स्वास्थ्य के लिए	कई प्रकार की बिमारीयों का होना	इससे स्वास्थ्य अच्छी रहेगी।
असर	1 से 3 माह तक ही	3 वर्षो तक

और कई प्रकार के नुकसान है रासायनिक खाद से पहले भी ज्यादा से ज्यादा गोबर खाद का ही उपयोग होता था जिसे हमे बनाये रखना है । और अपने स्वास्थ्य को

पौष्टिक अनाज की जानकारी व उनके गुण

मोटे अनाज	प्रोटिन (ग्राम)	खनिज (ग्राम)	लाह (मिग्रा)	कैल्सियम (मिग्रा)
मक्का	10.6	2.3	16.9	38
कोदो	8.3	2.6	0.5	27
मड़िया	7.3	2.7	3.9	34.4
कांग	12.3	3.3	2.8	31
जोवार	9.6	2.8	3.5	26.5
बाजरा	7.2	2.1	4.1	24
कुटकी,सांवा	7.7	1.5	9.3	17

स्रोत –Milet Network of India

हण्डी दवाः–देशी गाय का गोबर–1 किला, गौमुत्र–2 लीटर, गुड़–100 ग्राम, नीम पत्ता– 1 किलो, करंज पत्ता– 1 किलो, दीमक– 1 मुठ्ठी

बनाने की विधिः– सभी सामग्री को अच्छी तरह मिलाकर एक घड़ा में डाल दें और जूट की बोरी से घड़ा का मुंह बन्द कर दे उसे 7दिनों तक छायादार जगह पर रखे। 7 दिन के बाद रस को पतले कपड़े से छान ले। यह रस ही दवा का काम करता है। पुनः बनाने के लिए 1 लीटर गौमुत्र डालकर 7 दिन के लिए पर्व जैसे बांधकर रख दे फिर 8वें दिन रस निकाल सकते है इस प्रकार 6 माह तक इस मिश्रण का उपयोग कर सकते है।

Published by

लोक आस्था सेवा संस्थान

Supported by

igsss Indo-Global Social Service Society